संपादकीय

साप्ताहिक न्याय साक्षी
अधिकार से न्याय तक

एक और सफेद लूट

देश में पब्लिक सेक्टर के दूसरे सबसे बड़े बैंक पंजाब नैशनल बैंक (पीएनबी) के साउथ मुंबई स्थित एक ब्रांच में हुए 11 हजार करोड़ रुपये से भी ज्यादा के घोटाले ने सबको सकते में डाल रखा है। कहा जा रहा है कि बैंक के दो कर्मचारियों ने दो बड़े हीरा व्यापारियों नीरव मोदी और मेहुल चोकसी के साथ मिलकर इतना बड़ा कांड कर डाला और किसी को कानोंकान खबर नहीं हुई। बैंक प्रबंधन अपनी प्रेस विज्ञप्ति में खुद को शाबाशी देता दिख रहा है कि उसने खुद यह धोखाधड़ी पकड़ी, सीबीआई को खबर दी और पहली नजर में दोषी लग रहे कर्मचारियों के खिलाफ कार्रवाई भी की। मगर यह बात भी सामने आ रही है कि इस धोखाधड़ी की कुछ जानकारी बैंक को पहले ही हो चुकी थी और केंद्र सरकार भी इससे बिल्कुल अनजान नहीं थी। इसके बावजूद न तो समय से मामले को ऑडिट और निगरानी के दायरे में लाया जा सका, न ही मुख्य घोटालेबाजों को प्राथमिकी दर्ज होने के एक-दो दिन पहले और बाद विदेश जाने से रोका जा सका। ऐसा क्यों हुआ, इस चिंता का समाधान भी बाकी कानूनी कार्रवाई के साथ ही किया जाना चाहिए। पीएनबी प्रबंधन के तमाम दावों के बावजूद अभी तक इस घोटाले का वास्तविक आकार सामने आना बाकी है। कई और बैंकों के तार भी इस घोटाले से जुड़े हैं, लेकिन उनका कहना है कि घोटालेबाजों को कर्ज उन्होंने पीएनबी द्वारा जारी कागजात देखकर ही दिए थे। भारतीय रिजर्व बैंक ने इस मामले से जुड़ी सारी अटकलबाजी पर यह कहकर विराम लगा दिया है कि पूरे कर्जे की अदायगी पीएनबी के ही सिर आनी है।

नेपाल का नया मुकाम

नेपाल में एक नई शुरुआत हो रही है। सीपीएन-यूएमएल के अध्यक्ष केपी शर्मा ओली गुरुवार को दूसरी बार नेपाल के प्रधानमंत्री बने। करीब दो महीने पूर्व गणतांत्रिक संविधान के तहत हुए पहले संसदीय और स्थानीय चुनावों में वाम गठबंधन ने सत्तारूढ़ नेपाली कांग्रेस को भारी शिकस्त दी थी। ओली के नेतृत्व वाली सीपीएन-यूएमएल और प्रचंड के नेतृत्व वाली सीपीएन-माओवादी सेंटर के गठबंधन ने संसद के निचले सदन की 275 सीटों में 174 सीटों पर जीत दर्ज की, जबकि उच्च सदन की 59 में से 39 सीटें उसे प्राप्त हुईं। इस तरह नेपाल में तकरीबन एक दशक तक चले गृहयुद्ध के बाद नवंबर 2006 में चालू हुई राजनीतिक प्रक्रिया अब जाकर एक निश्चित मुकाम पर पहुंच पाई है। यह प्रक्रिया संयुक्त राष्ट्र की देखरेख में प्रचंड के नेतृत्व वाले माओवादियों और नेपाल सरकार के बीच हुए समग्र शांति समझौते के साथ शुरू हुई थी, जिसके तहत नेपाल में राजशाही हमेशा के लिए खत्म हो गई और एक संघीय गणतांत्रिक राष्ट्र के रूप में उसकी नई पहचान बनी। तब से अब तक 11 साल लंबी सियासी प्रक्रिया के दौरान नेपाल ने कई उतार-चढ़ाव देखे। साल 2008 में वहां संविधान सभा चुनी गई, जिसका कार्यकाल दो साल का था। लेकिन राजनीतिक असहमति के कारण बार-बार कार्यकाल बढ़ाने के बावजूद संविधान का कोई सर्वसम्मत खाका वह नहीं पेश कर पाई। अंततः 2012 में नेपाल के सुप्रीम कोर्ट ने हस्तक्षेप किया और 2013 में दोबारा संविधान सभा का चुनाव हुआ। इस दूसरी संविधान सभा ने दो साल के भीतर 2015 में नया संविधान सौंप दिया, जिसके तहत ही यह आम चुनाव संपन्न हुआ है। नेपाल के संविधान के अनुसार वहां की संसद में दो सदन हैं- प्रतिनिधि सभा और राष्ट्रीय सभा। प्रतिनिधि सभा में 275 सदस्य पांच वर्षों के लिए चुने जाते हैं, जिनमें 165 सदस्य एकल सीट निर्वाचन क्षेत्रों से जबकि 110 अनुपातिक पार्टी सूची से आते हैं। राष्ट्रीय सभा में 59 सदस्य 6 वर्षों के लिए चुने जाते हैं, जिनमें 3 राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत किए जाते हैं।

उनके पापों के बाद अपने पुण्य भी बताएं

संसद में राष्ट्रपति के अभिभाषण पर हुई बहस के दौरान प्रधानमंत्री ने दोनों सदनों में लंबे और जोरदार भाषण दिए थे। विपक्ष के शोर-शराबे के बावजूद वे बोले और खूब बोले। उन्होंने अपनी सरकार की उपलब्धियां भी गिनाई थीं, पर सुनने वालों को जो याद रहा, वह लोकसभा में पिछली सरकारों की आलोचना थी और राज्यसभा में एक महिला सांसद की हंसी पर उनकी रामायण सीरियल वाली टिप्पणी। यह मौका था प्रधानमंत्री के लिए अपनी सरकार के लगभग 4 साल की उपलब्धियों को रेखांकित करने का। विपक्ष द्वारा की जा रही आलोचनाओं का जवाब भी वे दे सकते थे पर पता नहीं क्यों, उनका सारा जोर पिछली सरकार को कोसने पर ही लगा रहा। पिछली सरकार की विफलताओं को गिनाना गलत नहीं है पर अब समय आ गया है जब भाजपा के नेतृत्व वाली सरकार को भी अपनी उपलब्धियों को सामने रखना चाहिए। अगला चुनाव बहुत दूर नहीं है और जिस युवा पीढ़ी की ताकत की दुहाई हमारे प्रधानमंत्री अक्सर दिया करते हैं, वह उग्र ना सही, बेचैन जरूर होती जा रही है। प्राचीन भारत की महानता की बजाय अपनी निगाह आने वाले कल के भारत में उसके जीवनस्तर में होने वाले सुधार पर है। और सच्चाई यह है कि सरकार जिन उपलब्धियों के दावे कर रही है, उन पर देश की युवा पीढ़ी को विश्वास नहीं हो पा रहा। प्रधानमंत्री ने अपने सांसदों को निर्देश दिया है कि वे अपने चुनाव क्षेत्रों की जनता को सरकार की उपलब्धियों से परिचित कराएं लेकिन उन्हें अपने सांसदों को यह निर्देश भी देना चाहिए कि वे अतार्किक और असंगत बातें ना करें। एक सांसद हैं जो कल तक यह दुहाई दे रहे थे कि ताजमहल मकबरा नहीं, मंदिर है! एक भाजपाई मुख्यमंत्री हैं जो जेलों में गौशालाएं बनाने का संदेश दे रहे हैं! एक और सांसद हैं जो देश के मुसलमानों को पाकिस्तान या बांग्लादेश जाने की सलाह दे रहे हैं। यह सही है कि पिछले चुनावों में भाजपा को हिंदू वोटों से बहुत मदद मिली थी पर कम से कम प्रधानमंत्री इस बात को जरूर समझते होंगे कि उनकी सफलता में सबको साथ लेकर चलने और सबका विकास करने की उनकी बात का भी काफी बड़ा हाथ था। पर सच यह भी है कि मतदाता ने पहले भले 60 सालों के हिसाब की बात पर यकीन किया हो पर अब वह 60 महीनों का हिसाब मांगेगा। बहुत समय नहीं बचा है सरकार के पास इस हिसाब को तैयार करने का। और जो कुछ सामने दिख रहा है, वह सरकार के लिए बहुत आशाएं जगाने वाला भी नहीं होना चाहिए। अपनी हाल की विदेश यात्रा में प्रधानमंत्री ने एक बात कही थी कि भारत की जनता अब यह नहीं पूछ रही कि क्या होगा, बल्कि यह पूछ रही है कि कब तक होगा। मतलब यह कि प्रधानमंत्री विश्वास दिलाना चाहते हैं कि देश की जनता आश्वस्त है कि वर्तमान सरकार अच्छा काम कर रही है, बस वह देख रही है कि इस अच्छे काम का परिणाम कब तक सामने आएगा। यह सही है कि 5 साल में पिछली सरकारों के सारे पाप नहीं धुल सकते। हां, प्रधानमंत्री ने लोकसभा में दिए अपने भाषण में कांग्रेसी सरकारों के पापों की ही बात कही थी। उन कथित पापों की बात काफी सुन ली है देश ने। अब वह उन पुण्यों की बात सुनना चाहता है, जिसके प्रताप से आने वाला कल बेहतर होगा। प्रधानमंत्री ने 50 दिन में नोटबंदी के सुपरिणामों के सामने आने का दावा किया था, लेकिन अब तक तो उन पुराने नोटों की गणना भी नहीं हो सकी जो रिजर्व बैंक में जमा किए गए हैं। पिछली सरकार को मतदाता ने इसलिए नकारा था कि उनका भरोसा टूट चुका था। और यह भरोसा टूटने में 50 साल नहीं लगे थे। पिछली बातें जनता भूल जाती है। उसे सिर्फ मनमोहन सिंह की सरकार के 5 सालों की नाकामयाबियां याद थीं। अब भी वह नई सरकार के 5 सालों की कामयाबियों के आधार पर ही यह तय करेगी कि मोदी सरकार को फिर से सत्ता में आना चाहिए या नहीं। और इन कामयाबियों को नापने-तोलने का पैमाना जुमले या नारे या दावे या वादे नहीं होंगे, उन्हें सामने दिख रही हकीकत के तराजू पर तोला जाएगा। सामने जो दिख रहा है वह यह है कि देश में बेरोजगारी कम नहीं हो रही। लाखों-करोड़ों को रोजगार देने के वादे किए गए थे। इन वादों की सच्चाई का एक नमूना यह है कि राज्य के सचिवालय में चपरासी बनने के लिए लगी हजारों की कतार में स्नातक भी है, इंजीनियर भी हैं और एमबीए भी! आजकल पकौड़ा वाला जुमला भी काफी सुनाई दे रहा है। यह सच है कि पकौड़े बेचना किसी भी दृष्टि से घटिया काम नहीं है पर पकौड़े तो हमारे दादा-परदादा के जमाने में भी बेचे जाते थे। इसमें सरकार को किस बात का यश मिलना चाहिए? हां, सरकार को इस विफलता का अपयश जरूर मिलता है कि वह पकौड़े बेचने वाले की स्थिति में कोई सुधार नहीं ला पाई। उलटे छोटे काम करने वालों की स्थिति बिगड़ी ही है। पता नहीं प्रधानमंत्री तक यह जानकारी पहुंची है या नहीं कि आज देश में चमड़ा उद्योग और मांस बेचने के काम में लगे लोगों में बेरोजगारी फैल रही है। गाय को बचाने के नाम पर जिस तरह का वातावरण देश में बन रहा है, उससे इन उद्योगों पर लगातार विपरीत असर पड़ रहा है। प्रधानमंत्री ने गौरक्षा के नाम पर हो रही धांधली की आलोचना करके स्पष्ट कर दिया था कि वह इस संदर्भ में कानून हाथ में लिए जाने के खिलाफ हैं।

तीखे पकौड़ों की चटपटी राजनीति

बचपन से लेकर आज तक जितनी भी शादियां अटेंड की हैं, उनमें पकौड़े जरूर परोसे गये हैं। बाराती स्वागत स्थल पर पहुंचते ही चाय-पकौड़ों पर टूट पड़ा करते। पुदीने और इमली की मीठी चटनी के साथ पकौड़े खाकर जो तृप्ति हुआ करती, वह आजकल के पनीर टिक्का, टिक्की, कटलेट या स्प्रिंगरोल्स में नहीं है। अब शादियों में पकौड़े को स्नैक्स कहने लग गये हैं, जैसे कि इसका प्रमोशन हो गया हो। शायद इसी प्रमोशन की वजह से पकौड़े रेहड़ियों व गलियों से उठकर संसद के गलियारों तक जा पहुंचे हैं। प्लेटों से उठकर पार्टियों के झंडों के नीचे आ गये हैं। अब हमारे पकौड़े खाने की वस्तु से ऊपर उठकर हथोड़े बन गये हैं और घमासान कर रहे हैं। जिस तरह घोड़े चने खाकर दौड़ने लगते हैं, वैसे ही चने के बेसन ने इस बार कमाल कर दिया है और बेसन के पकौड़ों ने भगोड़ों को दौड़ा दिया है। कोई पकौड़ों पर शोध कर रहा है तो कोई पकौड़ा-भंडार का फीता काट रहा है। कोई पकौड़ा-संस्कृति पर शोध कर रहा है तो मातायें अपने बेटों को भावी पकौड़े वाले के रूप में निहार कर गद्गद हो रही हैं। आज से कुछ साल पहले तक घर में भी कोई खास मेहमान आता तो चाय-पकौड़ों से खातिरदारी करना बड़ी बात मानी जाया करती। खास लोगों को आलू-प्याज की जगह पनीर के पकौड़े खिलाये जाते। हमारे तो घरों में हर शनिवार को पकौड़े बनाने की भी परम्परा रही है। पर पकौड़ों के तीर चल निकलेंगे, यह अन्दाज़ा नहीं था। पकौड़ा शब्द आज यूं हो गया है, मानो कोई मारकर भाग गया हो। सब जानते हैं कि पकौड़े तेल में ही तले जाते हैं पर आज के दिन लग रहा है कि किसी ने पकौड़ों को गारे में तल दिया है और छींटम-छींट हो रही है।

सुचिंतित और ठोस कार्यक्रम उठाएं

डेरेन अलिमोंग्लू एंड ए रॉबिन्सन ने अपनी किताब ह्वाई नेशन फैलः में लिखा है कि कोई भी राज्य गरीबी, भुखमरी और बेरोजगारी को खत्म कर सकता है बशर्ते वह शिक्षा में निवेश करे.शिक्षा व्यवस्था की दुर्दशा के कारण उत्तर प्रदेश सुर्खियों में है. उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के आंकड़ों को देखें तो पाते हैं कि वहां का परिणाम उतार-चढ़ाव भरा रहा है. सन 1992 में कल्याण सिंह की सरकार में उत्तीर्ण प्रतिशत हाई स्कूल परीक्षा में सिर्फ 14 प्रतिशत था जो कि यूपी बोर्ड के 90 साल के इतिहास में न्यूनतम था और 2013 में 92.7 प्रतिशत जो अभी तक का उच्चतम प्रतिशत है. यह राजनीतिक इच्छाशक्ति का नतीजा है. राजनीतिक इच्छाशक्ति से ही वृहद स्तर पर नकल को रोका जाता रहा है. योगी सरकार ने भी मजबूत राजनीतिक इच्छाशक्ति का इजहार किया है और सरकार ने शिक्षा माफिया को खत्म करने का प्रणलिया है.उत्तर प्रदेश बोर्ड की परीक्षा इसका उदाहरण है, जहां बोर्ड ने कुछ दिशा-निर्देश लागू करके; जैसे परीक्षा दो स्तरों पर करवाना, परीक्षा केंद्र में आधार कार्ड द्वारा प्रवेश अनिवार्य करना, प्रिंटेड प्रवेश पत्र की अनिवार्यता, परीक्षा में नकल को रोकने के लिए स्पेशल टास्क फोर्स (एसआईटी) और क्षेत्रीय संस्थाओं का सहयोग लेना. इसका परिणाम यह हुआ कि अभी तक लगभग 10 लाख 50 हजार परीक्षार्थी परीक्षा छोड़ चुके हैं. जैसा कि हमें मालूम है कि लगभग 61 लाख परीक्षार्थियों में से 15 प्रतिशत ने परीक्षा ही नहीं दी. सरकार सुशासन के प्रति अपनी इच्छा शक्ति को दिखा रही है, यह सराहनीय है. परंतु सिर्फ परीक्षा के समय सख्ती बरतने से उत्तर प्रदेश की शिक्षा व्यवस्था को नहीं सुधारा जा सकता है. अगर योगी सरकार सच में उत्तर प्रदेश का कायाकल्प करना चाहती है तो उसे गिरती हुई शिक्षा व्यवस्था को मजबूत करना होगा. आज उत्तर प्रदेश शैक्षणिक दुर्दशा के दुष्चक्र में फंसा हुआ है. 15 प्रतिशत परीक्षार्थियों का परीक्षा न देना एक जीता जागता उदाहरण है. इस आंकड़े से उत्तर प्रदेश की शैक्षणिक प्रणाली में व्यापक भ्रष्टाचार का पता चलता है. अपर्याप्त स्कूली ढांचा बड़े पैमाने पर शिक्षकों का स्कूलों से अनुपस्थित रहना,

स्मृतियों की पूंजी

हर वह शहर, जिससे होकर हम कभी गुजरते हैं, जहां ठहरते हैं, उससे एक नाता-सा बना लेते हैं। हमारी स्मृतियों के जंगल में उस शहर के लिए एक कोना तैयार हो जाता है। संडीला की रेवड़ी, आगरे का पेठा, मेरठ की गुड़ पट्टी, लखनऊ के कबाब, वाराणसी की जलेबियां, देहरादून के मोमोज, मसूरी का मैगी प्वाइंट, जयपुर के मिर्च वाले पकौड़े, मुंबई का बटाटा वड़ा और ऐसे तमाम छोटे मगर कीमती जायके अपने शहर का स्वाद बनाते हैं और उनसे हमारा रिश्ता मजबूत करते हैं। लखनऊ का भूल-भुलैया जिसने भी बनवाया, लखनऊ में रहने वाले हर किसी का उस पर हक़ है कि वह यहां का बाशिंदा है। जिन सड़कों पर कितनी सुबह-शामों को आते-जाते, उतरते-डूबते, यूं ही गुजरते देखा, वो उनकी स्मृतियों की पूंजी में जमा हो जाती हैं। गोमती के किनारे उगे चटक जंगली फूल की अनुभूति भी नदी के साथ हमारी यादों से जुड़ जाती है। अपनी नदी, अपने पोखर, अपनी झील, अपनी नयार से दूर बैठे व्यक्ति को कभी अकेले में याद आती है उसकी तरल ध्वनि। मई-जून की किसी बौरायी-सी दोपहर में चिहुंकती नदी की तपन से गालों पर गर्म हवा के थपेड़े पड़े होंगे। किसी शहर से गुजरते हुए उस शहर की एक ख़ास गंध हमारे भीतर रह जाती है। हमारी स्मृतियों के इन शहरों से ठीक उलट नये मिज़ाज के शहर भी तेजी से बन और बस रहे है, जिनसे चाह के भी कोई रिश्ता नहीं जुड़ पाता। ऐसी शहरों की चिकनी सड़कों पर कितने साल गुजार के भी दिल का कोई तार यूं नहीं जुड़ता जैसे अपने मोहल्ले की टूटी-फूटी सड़कों से जुड़ा करता था। इन हाईटेक शहरों में लकदक इमारतें हैं, मॉल हैं, बड़े-बड़े वाटर पार्क हैं लेकिन ये उस बाजार का हिस्सा हैं जहां हम सबसे बड़े प्रोडक्ट होते हैं। हम वो प्रोडक्ट होते हैं, जिनके लिए कई सारे प्रोडक्ट बनाये जा रहे हैं।

शब्द सामर्थ्य Shabd Samarth

बाएं से दाएं

1. याद, स्मरण 3. अग्नि, आग, पवित्र करने वाला 6. गौ जाति का नर 8. निशाचर, रात में विचरण करने वाला 10. मुस्कुराहट, तबस्सुम 11. खारा, नमक के स्वाद जैसा 14. मुख्यभाग, निचोड़ 16. पिंडली व एड़ी के बीच की दोनों ओर उभरी हड्डी, गुल्फ 18. अद्भूत, विचित्र 21. सम्राट, बादशाह, नरेश 22. कृति, निर्माण करना, बनाना 23. बड़ी थाली 24. समूह, दल 26. एहसानमंद, कृतज्ञ 27. ध्वनि, सदा 28. श्रीकृष्ण के बड़े भाई, हलधर।

ऊपर से नीचे

2. अपमान, अनादर, अवज्ञा 3. जल, नीर, अम्बु 4. वाणी, वादा, कथन 4. कर्म शब्द का अपभ्रंश, भाग्य 7. लकड़ी का घूमने वाला एक गोल खिलौना, बिजली का बल्ब 9. लोग, प्रजा 10. यात्री, राही, पथिक 12. कीड़ा 13. चोचला, अदा 15. दंड 17. अवैध, अनुचित 18. जो आधिकारिक न हो, जो अधिकार प्राप्त न हो 19. जैसा होना चाहिए ठीक वैसा, सत्यपरक, वाजिब 20. ताकत, शक्ति 24. प्रश्न, समस्या 25. घटना, घटना का वर्णन 26. एक प्रसिद्ध पक्षी जो रात में विचरण करता है, लक्ष्मीजी की सवारी 27. पानी, चमक।

1	2	■	3	4	5	■	6	7
■	8	9				■	■	
10			■	11		12	13	■
14		■	15	■	■	16		17
	■	18		19	20	■	21	
22			■	23		■	■	
■	■		■		■	24	25	
26				■	27			■
	■		■	■	28			

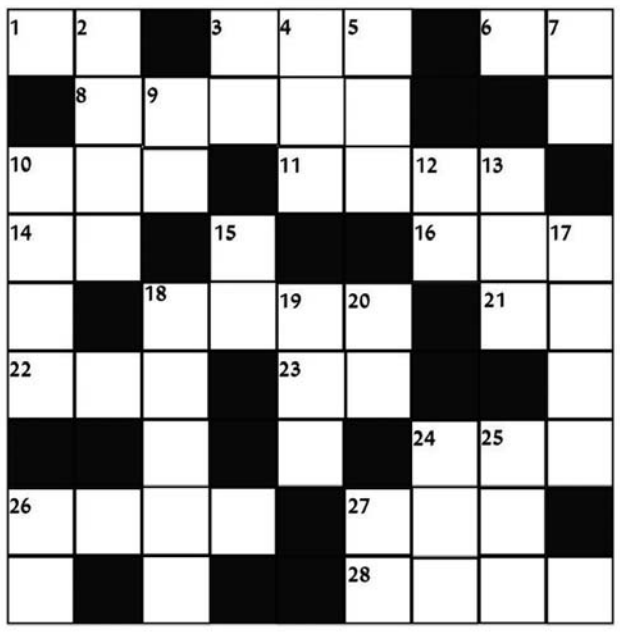

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 23 का हल

टे	ढ़ा	मे	ढ़ा	■	म	हा	र	त
क	■	ह	■	■	■	■	ज	न
■	जा	न	की	■	क	म	नी	य
■	■	त	म	क	ना	■	■	■
म	■	■	त	ह	त	■	दा	ब
सी	मा	■	■	ला	■	स	न	द
हा	थ	म	ल	ना	■	वा	■	च
■	■	द	■	■	घा	ल	मे	ल
■	ब	द	ह	वा	स	■	■	न

सू-दोकू

	2		6		8		3	
9		8		3		4		
							5	
5		2			7		6	
	8		4			1		3
				9				
8			9				1	
	5			1		6		2
		1	7				4	

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गो का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक र सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.23 का हल

2	6	3	8	1	4	9	7	5
9	5	4	2	6	7	3	1	8
8	7	1	9	3	5		6	2
6	2	7	5	4	8	4	3	9
3	9	8	6	7	1	2	5	4
4	1	5	3	2	9	6	8	7
5	3	2	4	8	6	7	9	1
1	8	6	7	9	2	5	4	3
7	4	9	1	5	3	8	2	6

राशिफल

मेष– किसी वाद विवाद को पकड़कर आपको अपने सहयोगियों और वरिष्ठ अधिकारियों से ज्यादा तर्क-वितर्क नहीं करना चाहिए।

वृष– आर्थिक मसलों में सोच समझ कर किए गए निवेश अत्यधिक फायदा दे सकते हैं।

मिथुन– आपका काम करने का तरीका नया है। किसी भी जटिल कार्य को आसानी से पूरा कर देने में आपको ज्यादा वक्त नहीं लगता है।

कर्क– किसी भारी काम का बोझ आज आपके ऊपर आ सकता है इसके लिए आपको अपने काम से छुट्टी लेनी पड़े।

सिंह– किसी अच्छे अधिकार क्षेत्र में घुसकर अपना वर्चस्व कायम रखना आपकी पुरानी आदत है।

कन्या– हो सकता है आजकल आपको कोई ज्यादा महत्वपूर्ण और जरूरी काम सौंप दिया हो, लेकिन आपको बिना किसी शंका और विचार के अपने कर्तव्य पर व्यस्त रहना चाहिए।

तुला– आज सुबह से ही कुछ अजीब सा माहौल आपके आगे पीछे बना रहेगा।

वृश्चिक– कई बार आप न चाहते हुए भी ऐसे दौर में फंस जाते हैं जहां से निकलने पर काफी जद्दोजहद करी पड़ती है।

धनु– शेयर बाजार के चक्कर में पड़कर आपने काफी धन नष्ट कर दिया है।

मकर– आज आपके अन्दर खूब सारी एनर्जी और उत्साह का संचार होगा। छुट्टी के बावजूद खूब सारा काम निपटा देने की इच्छा करेगी।

कुंभ– लंबे समय संघर्ष करने के बाद अब आपको लगेगा कि कहीं बैठकर एकांत में कुछ समय गुजारना चाहिए।

मीन– आर्थिक मसलों में सोच समझ कर किए गए निवेश अत्यधिक फायदा दे सकते हैं।